

अनन्तश्री स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती जी महाराज

आनन्द प्रस्तुति ऑडियो विजुअल सेंटर
वृन्दावन





ब्रज के ठाकुर

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

ब्रज के ठाकुर

व्याख्याता :
अनन्त श्री स्वामी अखण्डानन्द जी सरस्वती

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

परमपूज्य महाराजश्री के आनन्द जयन्ती
महोत्सव के पावन पर्व पर

त्वदीय वस्तु गोविन्द !
तुभ्यमेव समर्पयेत् ।



श्रीसुरेन्द्र भाई शाह, बड़ौदा
के सौजन्य से
आनन्द प्रस्तुति ऑडियो विजुअल सेंटर
आनन्द वृन्दावन
द्वारा
वितरणार्थ प्रकाशित

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

॥ॐ॥

शुभाशीर्वाद

परमपूज्य महाराजश्रीका सत्साहित्य पिछले 50 से भी अधिक वर्षों से सत्साहित्य प्रकाशन ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि वर्तमान में प्रकाशित ग्रन्थों की कुल संख्या 200 के लगभग पहुँच चुकी है एवं यह साहित्य अध्यात्म जगत् में अत्यधिक लोकप्रिय सिद्ध हुआ है।

इधर पिछले कुछ वर्षोंसे '**आनन्द प्रस्तुति**' द्वारा पूज्य महाराजश्रीके प्रवचनों के **डी.वी.डी, एम.पी.3 एवं ए.सी.डी** अति अल्प कीमत पर सर्वसमान्य के लिये उपलब्ध करा दिये गये हैं। इन चक्रिकाओं (**सी.डी.**) की कुल संख्या 400 के लगभग हैं, साथ ही रिकार्डिंग का कार्य निरन्तर चल रहा है। उपरोक्त मुख्य प्रकल्प के अतिरिक्त '**आनन्द प्रस्तुति**' का

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

एक और सुन्दर प्रकल्प कुछ समय से क्रियान्वित है, जिसमें पूज्य महाराजश्री के विभिन्न उत्सवों पर **'प्रसाद'** रूपसे 'चक्रिका' एवं 'लघु पुस्तिका' वितरण किया जाता है। इसी श्रृंखला में इस वर्ष आनन्द जयन्ती पर आनन्द प्रस्तुति ने **'ब्रज के ठाकुर'** का 'प्रसाद' प्रस्तुत किया है। इस पुस्तिका की **संकलनकर्त्री बड़ौदा निवासी सौ. सपना चिराग शाह** का यह प्रथम संकलन है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि सौ. सपना बहिन भविष्य में भी पूज्य महाराजश्री के साहित्य के संकलन कार्य में इसी प्रकार अपना सहयोग देती रहेंगी। इनको एवं आनन्द प्रस्तुति के सभी सेवकों को मेरा भूरिशः शुभाशीर्वाद ! पाठकवृन्द लघु कलेवर के इस ग्रन्थ के भावों में डूबकर इसका आनन्द लें–इसी शुभकामना सहित,

विनयावनत

स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

ब्रज के ठाकुर

मनुष्य की बुद्धि में ऐसा भ्रम छा गया है कि, वह ''मैं सत्य हूँ'' इस बात को तो भूल जाता है और यह सत्य है, वह सत्य है, माने दूसरे में जो सत्य है, उसको देखने लगता है। और, यह पोथी में ज्ञान है, यह पंडित में ज्ञान है, यह ईश्वर में ज्ञान है, इस बात को तो देखने लगता है; पर ''मैं ज्ञानस्वरूप हूँ'' इस बात को भूल जाता है। इसमें आनन्द है, उसमें आनन्द है, ऐसे दूसरे में आनन्द देखने लगता है और स्वयं जो आनन्दस्वरूप है उसको भूल

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

गया! इसका परिणाम यह हुआ कि संसार में सत्य अनेक हो गये, ज्ञान अनेक हो गये, आनन्द अनेक हो गये किसके सत्य का पालन करोगे, कौन–कौन सा ज्ञान प्राप्त करोगे और किस–किस का भोग करके आनन्द लोगे ? बिखर गई मनोवृत्ति ! अब किसका सहारा लोगे ? किसी में कुछ है, किसी में कुछ है, किसी में कुछ है। तो जो अपनी सत्ता है, ज्ञान है, आनन्द है उसको तो एक जगह रहने दो। जहाँ है वहाँ रहने दो। यह जो बाहरी अर्थ को सत्य समझकरके उसके लिए भटक रहे हैं, भोग को सत्य समझकरके उसके लिए भटक रहे हैं, पोथियों में जो सफेद कागज पर काले–काले अक्षर लिखे हुए हैं, उसको ज्ञान

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

समझकर भटक रहे हैं, तो उसको आओ पहले एक जगह रखते हैं। सत्य है परमेश्वर, ज्ञान है परमेश्वर, आनन्द है परमेश्वर। तो फिर आनन्द के लिए भोगों में भटकना छूटेगा, ज्ञान के लिए पोथियों में भटकना छूटेगा, सत्य के लिए हीरे–मोती में भटकना छूटेगा। यह जो हमारे जीवन में एक तरफ की भटकन भर गई है इसको छुड़ाने के लिए सत्य, ज्ञान और आनन्द तीनों की एक जगह प्राणप्रतिष्ठा करनी चाहिए। उसी प्राणप्रतिष्ठा का नाम है 'भक्ति'। यह जो हमारा इष्टदेव है, यह सत्य है।

'सत् हरि भजन जगत सब सपना'।

भगवान् और भगवान् का भजन सत्य है और बाकी सब स्वप्न है। **'ज्ञान अखंड एक**

सीतावर'– हमारे भगवान् ही ज्ञानानन्द स्वरूप हैं। **'आनन्द हू के आनन्ददाता'**– सत्य को सत्य बनानेवाले, ज्ञान को ज्ञान बनानेवाले, आनन्द को आनन्द बनानेवाले ये हमारे इष्टदेव हैं, नहीं तो जीवन में टिकना जो है वह नहीं होगा। यह जो बुद्धि के बलपर वैराग्य करते हैं वे फिसल जाते हैं। और, जो अपने इष्टदेव में आनन्द की प्राणप्रतिष्ठा करके और वहाँ आनन्द देखने लगते हैं, उनके चित्त में सच्चा वैराग्य आ जाता है। इसीसे बताया कि भक्ति के दो बेटे हैं– एक ज्ञान और एक वैराग्य। जिसकी भक्ति करेंगे उसका ज्ञान होता जायेगा और उसके सिवाय जो होगा उसके अतिरिक्त होगा, उससे वैराग्य होता जायेगा। तो भक्ति संसार

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

के बन्धनों से छुड़ावेगी और भगवान् में जोड़ेगी, इसलिए भक्ति का एक रूप है–

'हरि सों जोरी सबन सों तोड़्यो,
मैं अपनो मन हरि सो जोड़्यो।

मैंने अपना मन भगवान् के साथ जोड़ दिया और दूसरों के बंधन से हमारा मन छूट गया। तो जबतक एक जगह हमारा सुख, हमारा ज्ञान, हमारा सत्य इकट्ठा नहीं होगा, तब तक जीवन में वैराग्य टिकाऊ नहीं होगा।

आपको समझदारी की बात क्या सुनावें ? देखो, कितनी बार आपको सुनाया है कि आप चाहते क्या हैं ? सुख–आनन्द चाहते हैं। कब–कब चाहते हैं ? हमेशा चाहते हैं।

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

कहाँ–कहाँ चाहते हैं? सब जगह चाहते हैं। किससे–किससे चाहते हैं? सबसे चाहते हैं। कितनी मेहनत करके चाहते हैं? बिना मेहनत के चाहते हैं। परोक्षरूप से चाहते हैं? – ना, व्यापकरूप से झिलमिल–झिलमिल ऐसा आनन्द चाहते हैं। अब सब बातोंको जोड़ दीजिए। हमेशा रहनेवाला आनन्द ईश्वर है। हर जगह रहनेवाला आनन्द ईश्वर है। सबमें रहनेवाला आनन्द ईश्वर है। बिना पराधीनता के मिलनेवाला आनन्द ईश्वर है। बिना परिश्रम के मिलनेवाला आनन्द ईश्वर है। ज्ञानस्वरूप आनन्द ईश्वर है। आप, सचमुच ईश्वर को चाहते हैं, ईश्वर के भक्त हैं। यह एक भ्रम है कि आप ऐसे आनन्द को ढूंढने के लिए वहाँ जाते हैं,

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

जो हमेशा रहनेवाली चीज नहीं है, जो हर जगह रहने वाली चीज नहीं है, जो हर में रहनेवाली चीज नहीं है। वहाँ आनन्द को ढूंढनेके लिए जाते हैं, जिसको ढूंढने में बड़ी पराधीनता, बड़ा परिश्रम, बड़ी परोक्षता है। चाहे कोई अपनेको नास्तिक कहे, कम्युनिस्ट कहे, रशियन कहे, चायनीज कहे– लेकिन वह ऐसा सुख चाहता है, तो उसका होना भी मानता है। ऐसा सुख चाहता है और ऐसे सुख का होना मानता है, तो वह नास्तिक कैसे है? वह तो ईश्वरवादी है। इसलिए दुनिया में कोई नास्तिक नहीं हो सकता। झूठे ही बिना जाने–बूझे, समझे अपने को नास्तिक कहते हैं। जब ऐसा सुख आप चाहते हैं, तब नास्तिक कैसे हैं ?

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

अब आओ, आपके ऐसे सुख की प्राणप्रतिष्ठा करें! उसका नाम आप राम रखो, कृष्ण रखो, शिव रखो! उस स्थान का नाम अयोध्या रखो, वृंदावन रखो, काशी रखो है वहीं। वही ईश्वर है भला! तो ऐसे ईश्वर से होना चाहिए प्रेम, भक्ति। तो भक्ति के लिए पहले महत्त्वबुद्धि की स्थापना होती है। यह धाम है भगवान् का। धाम, रूप, लीला, चेष्टा, सेवा–एक–एक का ध्यान कीजिए। अच्छा, देखो आपको सीधीसी बात बताते हैं। आप इस समय कहाँ बैठे हैं? तो बोले भाई, बम्बई में बैठे हैं। अरे, कहाँ? तो ह्यूजिस रोड और बाबुलनाथ के नाके पर बैठे हैं। अच्छा, इसको भी छोड़ो ! प्रेमपुरी आश्रम में बैठे हैं। अच्छा, इसको भी

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

छोड़ो ! प्रेमपुरी हॉल में बैठे हैं। अच्छा, इसको भी छोड़ो ! तो हॉल में जो तीन फुट की जगह है अब उसमें बैठे हुए हैं। अच्छा, जरा अपने मन के साथ एक खेल खेलिए आप। इस हॉल के बाहर अपना मन जाने न पावे, थोड़ी देर रोकिए। जिस तीन फुट में आप बैठे हैं, इसके बाहर आपका मन न जाने पावे। योग में इसको बोलते हैं– 'धारणा'।

'देश बंध चित्तस्य धारणा'।

अब आओ, आपके मन को वृंदावन में घुमा लावें। **'पंचयोजन मेवास्ति वनं मे देह रूपकम्'**– यह वृंदावन है। बीस कोस से बाहर आपका मन न जाये, व्रज में रहे। यह योग भी हो गया और धारणा भी हो गई। और, यह है

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

हमारे भगवान् का निवासस्थान– इसका नाम है वृंदावन। जो लोग अपने को संयम में लाना चाहते हैं, इसकी बागडोर अपने हाथ में रखना चाहते हैं, उनके लिए यह बात है। एक महात्मा वृंदावन की परिक्रमा कर रहे थे, बड़े प्रेम से। वृंदावन की परिक्रमा तो तीन घंटे में हो जाती है। नियम यह है कि, जिस देवता की परिक्रमा की जाय उसको दाहिने करके परिक्रमा की जाती है। तो महात्मा जी को लगा कि बाँयीं ओर से दिव्य सुगंध आयी। महात्मा ने सोचा कि यह क्या है ? यह तो वृंदावन के बाहर की सुगंध है, हमको नहीं चाहिए। इतने में महाराज बाँसुरी बजी। तो वृंदावन के बाहर से बाँसुरी आ रही है, यह तो हमको नहीं चाहिए। जब

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

मनुष्य अपनी वासनाओं को काबू में लाना चाहता है, तब उसको अपने मनको एक स्थान में रखना पड़ता है। **'देशोपाधिक, देश–विशेषोपाधिक'**– ब्रह्मउपासना इसको बोलेंगे। देश–विशेष की उपाधि से एक खास स्थान के घेरे में हम ब्रह्म की उपासना कर रहे हैं। हमारा तो यही ब्रह्म है।

हमारो तो मुरली वारो श्याम।
बिन मुरली बनमाल चंद्रिका
और न जानो नाम।।

यहीं कहूँ श्याम काहू कुंज में फिरत होइ हैं।
भुज भरि भेटिबे को हिय उमहत है।।

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

इसी स्थान में कहीं हमारे श्यामसुंदर हैं। यहीं कहूँ– वो पेड़ की ओट में, वो लताकुंज की ओट में, वो गाय के पीछे, हमारे श्याम सुंदर खेल रहे हैं, क्रीडा कर रहे हैं। **'भुज भरि भेंटी'**– मन यही होता है कि, दोनों हाथ से पकड़ें और हृदय से लगावें।

जिसको अपने मन को काबू में रखने की इच्छा नहीं है उसको ये बात पसंद नहीं आवेगी, हम जानते हैं भला ! परंतु अगर अपने मन को काबू में रखना है, तो आप आनन्द के लिए जो जगह–जगह भटक रहे हैं– कश्मीर में आनन्द मिलेगा, स्विट्जरलैण्ड में मिलेगा, पेरिस में मिलेगा, अमरीका में मिलेगा– मन की इस

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

भटकन को मिटानेके लिए एक स्थान में भगवान् का ध्यान धरो, भगवान् का भजन करो।

यहीं कहुँ श्याम...........यह देखो श्याम..
यह देखो श्याम..........श्याम–ही–श्याम।

अपने मनमें प्रत्यक्ष देखो, दूसरे स्थानों से आपका वैराग्य हो जायेगा। **'यहीं कहुँ श्याम'** यह है धाम ही महिमा। अब उसमें देखो, प्रातःकाल का समय है, गोचारण के लिए जा रहे हैं। सायंकाल का समय है, गाय चराके लौट रहे हैं। वहाँ तो दूसरी चर्चा ही नहीं। ब्रज माने 'ब्रह्मरज'– ब्रह्म का पहला अक्षर 'ब्र' और रज का आखरी अक्षर 'ज'– **'ब्रज'**। माने ब्रज की धूल भी ध्यान करने योग्य, वहाँ

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

की रज भी ध्यान करने योग्य है– **'ब्रह्मरज'** है।

एक महात्मा, कलाधारी के महंत थे। अब हमारा जहाँ आनन्द वृंदावन है वहाँ पहले टेंटी के पेड़ लगे थे, दूसरे भी पेड़ लगे थे। आकर पेड़ों से लिपट जाते, तमाल से लिपट जाते, उनसे बात करते– 'तुम हमारे भगवान् के प्यारे हो, तुम्हारी छाया में आकर श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाते हैं ! तुम्हारी डाल पर बैठकरके, दोनों पाँव लटकाकर– पीतांबर लटक रहा है, दोनों पाँव लटक रहे हैं, नाखून चमक रहे हैं और दोनों हाथ से बाँसुरी ले करके और बंशीध्वनि, बाँसुरी तुम्हारे ऊपर बजाते हैं। अब महाराज, लिपट जाते– धन्य हो तुम! वृक्ष तुम धन्य हो!

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

उन महात्मा को हमने प्रेम से ऐसे करते देखा है भला !

आओ, आपको श्रीवृंदावन के कुछ ठाकुरकी महिमा सुनावें ! वृंदावन में एक श्रीराधारमण नामके भगवान् हैं, श्री चैतन्य महाप्रभु के संप्रदाय के आराध्य देवता हैं। वहाँ पहले गोपालभट्ट थे। बड़े भारी महात्मा थे। उनके पास एक शालग्राम का गोला था बड़ा–सा, पांच सेर–सात सेर का शालग्राम का गोला, काला–काला। एकबार एक महारानीं आयीं, उन्होंने कहा कि भाई ब्रजमें जितने लोग ठाकुरजी की सेवा करते हैं, उनके ठाकुर सेवाका पोशाक बना दिया जाय। यह आपलोग नई बात नहीं समझना। अभी तो इसीसाल एक सज्जन वहाँ

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

गये थे, तो उन्होंने कहा, ब्रज में कितनी गौएं रहती हैं उनको इतना–इतना भूसा हमारी ओर से दे दिया जाय। अब लाखों गौएं रहती हैं महाराज। इसीसाल लाखों गायों को चारा देने की सेवा करके आये। जितने गाय रखनेवाले लोग हैं उनके पास जितनी गौएं, गौओं के हिसाब से उतना–उतना चारा उनको दे दिया गया। इसीसाल की बात है भला ! तो महारानी ने कहा कि जितने लोग ठाकुर सेवा करते हैं, उनके ठाकुर की पोशाक बना दी जाय। अब गोपालभट्ट के पास आयीं, उनके ठाकुरजी तो गोलमटोल ! उसने कहा, कितनी बड़ी पोशाक बनावें महाराज ? तो बोले कि तेरी जो मौज हो सो बना दे ! अब कह तो दिया, रात को बैठे

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

शालग्राम के पास, रोने लगे कि महाराज मैंने कह तो दिया, परंतु वह पोशाक लेकर कल आवेंगी तो मैं आपको पहनाऊँगा कैसे?– तो खट् महाराज पेटी खुली और उसमें से एक मूर्ति कोई डेढ़ हाथ की ! प्रकट हो गई ! अभी वह शालग्राम की जो शिला है, पीठ पर लगा है और जो पोशाक वह बनाकर ले आयी थी, वह बिलकुल अंट गई। अब भी पूजा होती है वहाँ। 'श्रीराधारमण' बोलते हैं।

एक श्रीबिहारीजी हैं। आपने जरूर सुना होगा। वे पहले निधिवन में प्रकट हुए हैं। लोग तो निधिवन बोलते हैं, वैसे इसका नाम होना चाहिए 'निधुवन'। निधुवन माने होता है जहाँ राधाकृष्ण विहार करते हैं। गोस्वामी लोग

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

आजकल उसको 'निधिवन' बोलते हैं। वहाँ जब तानसेन के गुरु संगीताचार्य हरिदासजी महाराज, जिन्होंने 'वृन्दावनीख्याल', 'वृन्दावनी सारंग' राग द्वारा संगीतशास्त्रमें वृन्दावन का नाम जोड़ दिया है, भजन करते तो उनको आवाज आती– 'मैं यहाँ हूँ, मुझे निकालो, 'मैं यहाँ हूँ, मुझे निकालो।' हरिदासजी महाराज ने खुदवाया तो वहाँ से बिहारीजी की मूर्ति निकली। यही जो बाँके बिहारी प्रसिद्ध हैं, वहीं से निकले। सुनते हैं, अकबर बादशाह आया उसने एक इत्रकी शीशी भेंट की हरिदासजी को, कि महाराज आप अपने ठाकुरजी पर चढ़ा दीजिए। उन्होंने ठाकुरजी पर चढ़ानेकी बजाय जहाँ बैठे थे वहीं रज पर वह इत्र गिरा दिया सारा–

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

का–सारा। अकबर ने कहा, 'महाराज, मैंने ठाकुरजी पर चढ़ाने के लिए, ठाकुरजी की सेवा के लिए इत्र दिया, तुमने बालू में फेंक दिया?' बोले– 'जा......जा..... हमारे ठाकुर जीका दर्शन कर।' अब दर्शन करने गया महाराज, तो उस इत्र की गंध से सारा मंदिर भरा हुआ था। अरे! यह क्या हुआ ? बड़ा आश्चर्यचकित हुआ। तो फिर हरिदासजी महाराज के पास आया, 'महाराज कोई सेवा बताओ हमको।' वह बड़ा आग्रह करे । विरक्तलोग महाराज, काहे की सेवा चाहिए? तो उन्होंने कहा, अच्छा, यमुनाजी पर जा, वहाँ से थोड़ी दूर देखना घाट जरा टूटा हुआ है, उसको तुम बनवा दो।' यमुनाजी पर गया

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

अकबर, तो देखा कि पन्ने और हीरे का बड़ा भारी घाट यमुनाजी के तट पर, उसमें थोड़ा–सा टूटा हुआ था। देखकर लौट आया, बोला– 'महाराज, हम तो अपनी सारी बादशाहत बेच दें तब भी इस घाट की मरम्मत कराने का धन हमारे पास नहीं है। इतने बड़े–बड़े हीरे, इतने बड़े–बड़े रत्न, इतने बड़े–बड़े मणिमाणिक्य जिनसे घाट बना है, दिव्य यमुनाजी। यमुनाजी का निर्मल धारा प्रवाह देख आश्चर्यचकित हो गया, अद्भुत है!

एकबार श्रीवल्लभाचार्यजी महाराज परिक्रमा कर रहे थे। उनके साथ गुजराती लोग भी थे। श्रीवल्लभाचार्यजी महाराज का ज्यादा प्रभावक्षेत्र गुजरात है। परिक्रमा के रास्ते

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

में महाराज एक गड्ढा पड़ा, उसमें बालू था– मैला–कुचैला। वल्लभाचार्य जी महाराज बैठ गये और उसमें से पानी लेकर अपने सिर पर छींटा मारा, आचमन किया। एक गुजराती बोला, महाराज क्या करते हैं? इतना गन्दा गड्ढा और इसमें आप आचमन करते हैं और इसका छींटा लेते हैं सिरपर, यह तो देखने में बड़ा गन्दा है। वल्लभाचार्यजी को जैसे गुस्सा आ गया हो, क्रोध आ गया हो और उसको ढकेल दिया गड्ढे में। उसी गंदे गड्ढे में गया, डूब गया– डूब कर निकला–अरे ! यह क्या है? यह तो बहुत बढ़िया जलाशय है। उसमें कमल खिले हुए हैं, उसमें बड़े–बड़े सारस आदि पक्षी विहार कर रहे हैं। उत्तम कोटिका घाट है। बाहर से देखने में गड्ढा

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

है और भीतर से तो दिव्य सरोवर, भगवान् के विहार का स्थान है। वह महाराज दिव्यचक्षु से दिखाई पड़ता है।

आप कभी बिहारीजी का दर्शन करने जायें, देखेंगे कि प्रायः एक मिनट में, दो मिनट में बिहारीजी के सामने पर्दा आ जाता है। पर्दा खींचते हैं, फिर हटाते हैं–खींचते हैं, फिर हटाते हैं। पर्दा आता है, जाता है– आता है, जाता है, लगातार एक दो मिनट से ज्यादा दर्शन नहीं कराते। इसका कारण आपको मालूम होगा। ऐसे तीर्थ में जायें तो वहाँ की बातें मालूम भी करनी चाहिए और वहाँ जो पंडे होते हैं, पुजारी होते हैं उनको कुछ देना भी चाहिए। क्योंकि, उनके पास न मकान है, न दुकान है, न नौकरी

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

है। उनकी तो सारी–की–सारी जीविका ही इस संस्कृति की रक्षा है। यह जो प्राचीन संस्कृति है, उसके वे पहरेदार हैं। और, दूसरे देशोंमें जाते हैं तो एक पॉउन्ड देना कि एक डॉलर देना कि आधा पॉउन्ड देना कि आधा डॉलर देना पहले से तय रहता है। देने के बाद गाईड आपको दिखाने के लिए ले जाते हैं। यहाँ तो गाईड पहले से कुछ तय नहीं करता है,आपकी श्रद्धा पर छोड़ देता है। आप दो आना दें, चार आना दें, पाँच पैसा दें, उसीमें उसकी जीविका चलती है। आप कहीं तीर्थ में जायें तो वहाँ की बात समझें। अपने हाथ से बुरा काम न करें, पाँव से बुरी जगह न जायें, मनसे किसीका बुरा न सोचें और सबको जहाँ तक हो सके

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

कुछ–न–कुछ दें और वहाँ की जानकारी प्राप्त करें। वस्तु में गुण नहीं होता है, अपनी श्रद्धा में गुण होता है।

तो बिहारीजी का पहले दर्शन ऐसे खुला होता था। एक कोई देवीजी आयीं वहाँ दर्शन करने! अब वे एक टक बिहारीजी को देखने लग गईं, प्रेम से! बिहारीजी ने भी प्रेमसे देखा, तो दोनों की आँख मिल गई। देखो, इन बातों को भी आप सुनिये भला। विश्वास मत करिए, फिर भी इसका आनन्द तो लीजिए! आप देखिये, बिहारीजी की मूर्ति और मुकुट धारण किये हुए हैं, उनके सिर में हीरा चमक रहा है, साँवरी मूर्ति है, ठुड्डी में हीरा चमाचम चमक रहा है ! बाँसुरी है, शृंगार है– देखने लगी वह

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

बहू और बिहारीजी ने भी उसको देखा ! दोनों की आँख मिल गई– आँखें चार हो गईं, माने देवीजी की आँख के साथ बिहारीजीकी आँख–चार हो गई ! अब तो देवीजी जब वहाँ से हटी, तो बिहारीजी ने भी अपना सिंहासन छोड़ दिया। वे तो महाराज आकाश मार्ग से जिधर वह देवीजी जायें उधर आ के उनके सामने खड़े हो जायें। देवीजी रास्ते की ओर, और बिहारीजी उसके आगे–आगे उसकी ओर मुख किये, आँख–से–आँख मिलाये चलें। देवीजी के साथ जा रहे बिहारीजी! हल्ला मचा ब्रजमें कि हमारे बिहारीजी तो जा रहे हैं। सब बड़े–बड़े भगत इकट्ठे हुए, अब भगत के वश में हैं भगवान्। अब देवी जी से कहा कि देवी

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

जी, आप फिर वहीं चलिए जहाँ खड़ी थीं। देवी जी को ले आए मंदिर में और बिहारीजी अपने सिंहासन पर आकर विराजमान हो गये। तो तब से फिर बीचमें पर्दा खिंच गया कि कोई देवी आकर के बिहारीजी को ले न जाये। हमारा भोला–भाला अहीरका बालक, इनको कोई देवीजी फिर अपनी आँख मिलाकर ले न जाए। इसका आनन्द लीजिए आप! आप यदि ऐतिहासिक अनुसंधान करने जायेंगे, ये हिस्ट्री की पुस्तकों में खोज करने से न आपको ताम्रपत्र मिलेगा, न शिलालेख मिलेगा। आप इसको प्रमाण से सिद्ध करनेकी कोशिश मत कीजिए। क्योंकि इसको काटनेके लिए भी तो आपके पास कोई प्रमाण नहीं है। जिस बात को काटनेके

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

लिए कोई प्रमाण न हो, उसको सिद्ध करनेकी क्या जरूरत है ? सिद्ध ही है। इसका आनन्द लीजिए—आनन्द।

एक दिन क्या हुआ कि रातको पुजारीजी पट बंद करके, फाटक बंद करके चले गये। चले गये और बिहारीजीके में मनमें आया कि हम दहीबड़ा खायें। वृंदावन में चाट बहुत अच्छी मिलती है। क्योंकि अभी वहाँ देशी घी का भी थोड़ा रिवाज है। मुंबई के लोगों को महाराज हमारे आश्रमकी रोटी अच्छी नहीं लगती, मोटी—मोटी होती है, तो शाम को घूमनेके लिए चले जाते हैं और चाट खाकर मजे से आते हैं। वहाँ दूधभात बहुत बढ़िया मिलता है, बिहारीजी के भोग में दूधभात, बासुंदी, दहीबड़े, पकौड़े

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

पचास, सौ, दो सौ, हजार आदमी रोज खायें तो सबको मिल सकता है भला ! अब बिहारीजी दहीबड़ा खानेके लिए दुकान पर चले गए, डट के खाया। जब चलने लगे तो दुकानदार ने कहा, पैसा ? ठन ठन पाल। बोले कि पैसा तो है ही नहीं हमारे पास। तो दुकानदार बोला, हम तो बिना पैसा लिए नहीं जाने देंगे। तो अपना सोने का कड़ा निकाल के रख दिया। रखले भाई ! दूसरे दिन जब मंदिर खुला तो बिहारीजीका एक कड़ा गायब। बड़ा हल्ला मचा। जब कड़े की खोज हुई तो दुकानदार आया और उसने बताया कि कल एक बालक आया था, साँवरा–सा था। उसने हमारे हाथ का दहीबड़ा खाया और उसके पास पैसे नहीं थे

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

सो अपना कड़ा रख दिया। तब से यह निर्णय हुआ कि रोज इस ठाकुर को दहीबड़े का भोग लगाया जाय– बड़ा चटोरा है ठाकुर। वृंदावन में तीन ठाकुर हैं। एक कमइया ठाकुर है, उसकी आमदनी बहुत है। उसको 'श्रीरंगजी' बोलते हैं। एक हैं सोवइया ठाकुर 'श्रीराधावल्लभजी'। राधावल्लभ दर्शन दुर्लभ!' जब देखो तो बोले कि अभी पट बंद हैं, आराम कर रहे हैं, विहार कर रहे हैं– सोवइया ठाकुर । और ये जो बिहारीजी हैं वो खवैया ठाकुर हैं– ये खानेवाले ठाकुरजी हैं। इनकी कई विलक्षणताएं हैं। सालभर में एक दिन चरणदर्शन होता है– अक्षयतृतीया के दिन। एक दिन मुकुट दर्शन होता है– शरदपूर्णिमा के दिन। एक बार झूले

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

पर आते हैं– हरियाली तीज के दिन। वह झूला भी पहले ढाई लाख रुपये का बना, कोई पचास साठ वर्ष पहले। फिर दस लाख रुपये का बना। अब तो वह करोड़ रूपये का हो गया। एक दिन के लिए बिहारीजी उस झूले पर झूलते हैं।

नारायण, एक सज्जन थे, अहीर थे। तो एक महात्मा बिहारीजी की सेवामें ही रहते थे। उनके पास आए और बोले 'महाराज, हमको चेला बना लो। महात्मा बोले कि तुमको चेला बनावेंगे लेकिन हमारी गाय चरानी पड़ेगी। तो बोले, अच्छी बात है। अब, गाय चराने गए तो दूसरे दिन बोले कि 'महाराज, भूख लगती है तो खाने को चाहिए'। 'अच्छा भाई, आधा सेर

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

आटा इसको दे दो, जंगल में रोटी बनाके खा लेगा'। आधा सेर आटा लेकर गये। सोचे कि गुरुजी ने हमें मंतर भी बताया है, ध्यान भी बताया है, भोग लगाने को भी बताया है, तो ठाकुरजी को लगाया भोग। अब आवें ही नहीं, वह तो हठ में आ गया– खाना पड़ेगा हमारे साथ। तो बिहारी जी आये, आधा–आधा बाँटकर खा गये। उसने जाकर गुरुजी से कहा कि महाराज, आधा तो बिहारी जी ने खा लिया, आधा मैंने खाया तो हमको कम हो गया, हमारा पेट नहीं भरा, तो आज से सेर भर आटा दो। तो सेर भर आटा दिया तो जाकर उसने बनाया। तो उधर राधारानी ने पूछा, 'प्राणप्यारे'! कल तुमने भोजन कहाँ किया ?– 'तो कहा हमारा

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

एक बड़ा भक्त है, बड़ी बढ़िया रोटी बनाता है जंगल में हमने वहाँ खाया। अब महाराज, दूसरे दिन दोनों आ गये राधाकृष्ण। अब वे दोनों तो खा गये। और, भगतजी भूखे रह गये। आकर गुरुजी से बोला कि महाराज सेरभर में काम नहीं चलता। वे तो दो हैं, दो आये थे आज– खा गये, हम तो भूखे रह गये ! अच्छा भाई इसको और दे दो। अब महाराज तीसरे दिन ग्वालबाल भी आये, गोपियां भी आयीं, सब बाँट कर खा गये। उसने आकर सब सुनाया। गुरुजी ने कहा कि भाई ऐसा नहीं हो सकता है। महाराज, ऐसा ही होता है, परीक्षा करिये। तो मालूम हुआ, कोई दीखे तो है नहीं सब गायब हो जायें। दूसरों को नहीं दिखें और

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

भगतजी खायें और उनके साथ खिलावें, खेलें। अब गुरुजी ने कहा, 'आप गाय की सेवा करनेके लिए मत जाइये, यहीं मंदिर पर देखभाल करते रहिए– कोई जाये आवे नहीं। एक दिन महाराज क्या हुआ रातको ठाकुरजीका किवाड़ खुल गया, निकले। अब वे पहरे पर बैठे थे, भगतजी। बोले कि देखो, गुरुजी हमारे हमें बैठा गये हैं पहरे पर। तुम इस समय रातमें यहाँ से निकल करके नहीं जा सकते। ठहर जाओ। बिहारीजी ने कहा कि भाई, तुम भी हमारे साथ चलो, हम कहीं ऐरी–गेरी जगह पर नहीं जाते, हम तो अपनी गोपियों के घर जाते हैं। सेवाकुंज पर जाते हैं, वहाँ नाचते हैं, खेलते हैं, रास करते हैं। वृंदावन में सेवाकुंज भी एक दिव्य जगह है।

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

ऐसा बताया जाता है कि रात को कोई प्राणी उस घेरेमें नहीं रहता, सब निकल जाते हैं और गोपी, राधा और कृष्ण सब वहाँ रासलीला करते हैं। अब बिहारीजी के साथ वे भी गये बेचारे ! अब वहाँ रासमंडल शुरु हुआ, बड़ा मंगल देश ।ता ता थै, ता ता थै–

अङ्गनामङ्गनामन्तरे माधवो,
माधवं माधवं चान्तरेणाङ्गना।
इत्थमाकल्पिते मण्डले मध्यग:,
सञ्जगौ वेणुना देवकीनन्दन:।।

एक गोपी एक कृष्ण, एक गोपी एक कृष्ण बीचमें राधाकृष्ण। वो नृत्य का समा जामा, बाँसुरी बजाते श्रीकृष्ण.....दुनिया भूल गई...। वह पांव की पटकन, वह नृत्य की गति पर

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

थिरकन, वह कुंडल की लटकन, वह पीतांबर की फहराहट, वह मस्तक, वह घुंघरू की ध्वनि, वह कमर में करधनी, वह जो ध्वनि होने लगी, मस्त हो गई दुनिया। इसी बीच में श्रीकृष्ण का जो नूपुर था, वह टूट गया पांव में से। भगतजी देख रहे थे, झट जाकर उन्होंने घुंघरू जो टूटे हुए थे उनको उठाया और अपनी चादर में लिया। सबेरे लौट आये श्रीकृष्णजी। प्रातः जब गुरुजी आये, उन्होंने कहा, फाटक खोलो, आरती करें चार बजे की। तो भगतजी ने कहा 'अभी नहीं महाराज, थोड़ी देर ठहर जाइये। अभी तो रातभर नाच कर आये हैं, अभी–अभी आराम करने गये हैं मंदिर के भीतर। अभी आप जगा देंगे तो क्या होगा ? जगाना ठीक

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

नहीं है। गुरुजी ठहर जाइए।' तो गुरुजी ने कहा 'ऐं, तुम कैसे कहते हो कि ये नृत्य करने गए थे ?'– तो बोले, देखो महाराज ये घुंघरू टूट गये थे रासमें, मैं लेकर आया हूँ। गुरुजी ने कहा, अरे भाई यह बात तो ठीक कह रहा है। तब से अबतक बिहारीजी की मंगलाआरती नहीं होती। सालभर में सिर्फ एक दिन मंगलाआरती होती है– जन्माष्टमी के दिन और किसी दिन मंगलाआरती नहीं होती है।

महाराज, ऐसी–ऐसी विलक्षण लीला के ये स्थान हैं। गुजरी–ग्वालिन! एक दिन पानी भर रही थी, संन्यासी लोग गेरुआ कपड़े पहन कर वहाँ 'अयं आत्मा ब्रह्म', 'अहं ब्रह्मास्मि'–

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

ऐसा ब्रह्म, ऐसा ब्रह्म, ऐसा ब्रह्म कर रहे थे। ग्वालिनों ने आपसमें पूछा 'यह ब्रह्म कौन है ?' एक गोपी ने कहा जाने दे ब्रह्म कोई भी होए, हमारे लाला का कोई साला होगा, रिश्तेदार होगा। पानी भरके ग्वालिनी लौटीं। एक गोपी पानी भरके आ रही थी, तीन घड़े सिर पर (बड़ा, इससे छोटा और इससे छोटा) और दो घड़े कांख के नीचे और एक कंधे पर पानी खींचने वाली रस्सी! चल रही थी उसका लंहगा एक काँटे में उलझ गया। अब वह बेचारी के दोनों हाथ फँसे, सिर फँसा, लटक नहीं सके, छुड़ा नहीं सके, चुपचाप खड़ी हो गई। इतने में ब्रजराज कुमार आ गये उसने कहा ऐ.... ऐ... गोपाल हमारा कपड़ा फँस गया है काँटे में,

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

जरा उसको छुड़ा दो। ब्रजराज कुमार बोले– 'जा.....जा... तेरे बाप का नौकर हूँ मैं ? काहे को छुड़ाऊँगा ? नहीं छुड़ाऊँगा।' अब महाराज बहुत देर तक दोनों में गपसप होती रही। न वो छुड़ावे न वो छूटे ज्यों–की–त्यों खड़ी। देखा और ग्वालिनियाँ आ रही हैं तो जाकर छुड़ा दिया काँटे में से। वो तो बेचारी मस्त हो गई। दूसरी ग्वालिनें आयीं, पूछा कि क्या हुआ रे ? हुआ क्या– **मन उलझाई बसन सुलझायो।** हमारा वस्त्र तो उसने सुलझा दिया, लेकिन हमारा मन उलझाके ले गया!

तो नारायण, यह जो लीला है न भगवान् की, यह जो धाम है, यह जो रूपमाधुरी है, यह

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

जो लीलामाधुरी है, यह आनन्द की लीला है। यह वेदांतियों का घटाकाश–मठाकाश नहीं है। यह नहीं है अन्तकरणावच्छिन्न, विषयावच्छिन्न चैतन्य की एकता। यह तो साक्षात् परब्रह्म परमात्मा का दर्शन है और जिसका मन उसमें लग जाता है उसको इसमें आनन्द आवेगा। अभी तो आपका मन विषयरस में लगा हुआ है, भोग में लगा हुआ है, विषयासक्ति में लगा हुआ है। जब उधर मन बहता है महाराज, ओहो.... क्या पूछना है ?

एक दिन हाथरस से एक सास–बहू आयी, मारवाड़ी होगी। बिहारीजी के मंदिर में गई, तो सास झट दर्शन करके निकल आयी, अब बहू

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

को निकलने में देर हुई। अब, बहू को देख करके श्यामसुंदर मुस्कुराये और बहू को ऐसी वो मुस्कान पसंद आयी कि उन्हीं की ओर देखे। अब सास बाहर से गाली दे। निकल, क्यों भीतर इतनी देर लगा रही है ? सास बाहर डाँटे और बहू जो है वो उलझ गई भीतर। अब सास की डाँट मानकर वो पीछे तो हटी– बिहारीजी को देखती रही और स्वयं पीछे हटती जाय, पीछे हटती जाय..... वो महाराज, चोखटा था, देहरी– उसमें पाँव फंस गया, गिर पड़ी और फिर वहाँ से बाहर नहीं निकली। सास कहने लगी, 'देखो, पांच हजार वर्ष हो गये लेकिन इसकी आदत वहीं–की–वहीं है, आदत छोड़नेका नाम ही नहीं लेता है। बहुओं को

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

फंसाने की आदत छोड़ता ही नहीं। वहाँ की लीला आप देखो न, क्या आनन्ददायक लीला है महाराज !

किसी भक्तका कहना है,

मा प्रेक्षिष्ठास्त्वं यदि सखे बन्धुसंगेऽतिरङ्ग।
गोविन्दाख्यं हरितनुमितः कोऽपि तीर्थोऽपकण्ठे।।

'मेरी बात सुन लो यदि आप संसार का सुख लेना चाहते हैं तो आप वृंदावन में जाकर गोविंदमाधुरी का दर्शन मत करना। वो तिरछी आँखें, वो टेढ़ी ठुड्डी, वो मंद–मंद मुस्कान, वो बंसी की ध्वनि– कभी मत देखना, यदि देखोगे तो ऐसा फँसावेगा, ऐसा फँसावेगा कि तुम्हारे जो संसार का मजा है, वही चला जायेगा।'

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

कहनेका अभिप्राय यह है कि यदि आप संसार के क्षुद्र सुख को छोड़ने के लिए तैयार हैं तो आइए, ब्रजके ठाकुर के पास, जहाँ आपको निरतिशय आनन्द की प्राप्ति होगी।



Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

अनन्त श्रीस्वामी अखण्डानन्द सरस्वतीजी महाराज

द्वारा विरचित

उपलब्ध साहित्य हेतु सम्पर्क–

सत्साहित्य प्रकाशन ट्रस्ट

स्वामी अखण्डानन्द पुस्तकालय,
आनन्द कुटीर, मोती झील, वृन्दावन–281121
जिला मथुरा (उ.प्र.), मो.– 09837219460

बैंक विवरण :–

Bank- Bank of Baroda
Branch-Vrindavan
SB A/C No.- 12000100002102
IFS Code- barb0vrinda

email-c.anandvrindavan@gmail.com
website-www.pujyamaharajshri.org

Cutting Size 4.25 x 5.25 inch

प्रवचन–सीडी,डीवीडी

अनन्त श्रीस्वामी अखण्डानन्द सरस्वतीजी महाराज

द्वारा प्रवचनों की सीडी, डीवीडी हेतु सम्पर्क–

आनन्द प्रस्तुति ऑडियो विजुअल सेंटर

आनन्द वृन्दावन, मोती झील

वृन्दावन– 281121, जिला– मथुरा (उ.प्र.)

फोन–0565–3292119

बैंक विवरण:–

Bank- Bank of Baroda
Branch-Vrindavan
SB A/C No.- 12000100012144
IFS Code- barb0vrinda

email-c.anandvrindavan@gmail.com
website-www.pujyamaharajshri.org